जीवन के बदलते दिन

मेरे हाथों की चूड़ियां खनक गई,
मैंने हैण्डपम्प बनाना सीख लिया
मेरे सिर का घूंघट खुल भी गया,
मैंने इण्डिया मार्क थ्री लगाना सीख लिया
चाहे धोती फटी—चाहे चूड़ी टूटी,
मैंने टूल्स पकड़ना सीख लिया
अरे हाथों में छाले पड़ भी गए,
मैंने प्लेटफार्म बनाना सीख लिया

मेरी-तेरी, हमसे-तुमसे, हमारी-तुम्हारी
सुनो बहन!
उतार-चढ़ाव की जिन्दगी में बदलते कदम।
मैं, एक हैण्डपम्प मैकेनिक हूं।

हूं तो तुम्हारी ही तरह गांव की गरीबन, मजदूर, कोल, हरिजन और अनपढ़। तुम तो जानती ही हो कि हम औरतों की जिंदगी पानी से इतने नजदीकी से जुड़ी है कि घर में पानी भरें तो हम औरतें ही।

और, जब हैण्डपम्प खराब होता है तो झेलना भी हम औरतों को ही पड़ता है।

जल निगम, एस.डी.एम., बी.डी.ओ. तथा ए.डी.एम. को ना जानने वाली हम बहनों ने तय किया कि क्यों न हम औरतें ही हैण्डपम्प बनाएं? कुछ हंसी, कुछ मजाक, कुछ ठिठोली, कुछ व्यंग और कुछ शर्तों के साथ हम औरतों ने हैण्डपम्प बनाना सीख ही लिया।

अरे! तुम याद करो कि पहले गांव में पम्प सुधारने पुरुष मैकेनिक आते थे। हैण्डपम्प बनाकर चले जाते थे। हमें पता ही नहीं था, जबकि पानी तो औरतें ही भरती हैं।

अब जब से हम बहनों ने पम्प बनाना शुरू किया, तब से तुम हमारे पास आती हो, बातें पूछती हो तो जानकारी भी मिलती है।

अरे हां, एक बात बताते खुशी हो रही है कि पहले जब भी हम गांव में हैण्डपम्प बनाने जाती तो गांव वाले कहते—

"मेहरिया का हैण्डपम्प बनइ हैं?"

"अरे! ई रोटी-गोबर-चूल्हा-बर्तन करने वाली का कर सकि हैं?"

"पम्प न छुओ नहिं तो बिगड़ जाई।"

लेकिन जब से हैण्डपम्प मरम्मत करके पानी निकाल दिया तो बस... गांव के ही लोग आकर कहने लगे—

"बहिनी, फिर आना, तुम तो गांव की रहने वाली हो, हमें जल्दी से मिल जाओगी, हम आसानी से सूचना दे देंगे। अब हमें भटकना न पड़ेगा।" जाति और औरत का भेद-भाव भूलकर कहते हैं कि—"आओ बहिनी रोटी खा जाओ।"

हमारी ज़िंदगी में कुछ ऐसे बदलाव आए कि अब लोग हमसे नमस्ते करने लगे और सीधा हमारे घर पर, रास्ते में, बाजार में मिलकर खराब हैण्डपम्प की सूचना देने लगे और हम भी गांव-गांव में लोगों को (हैण्डपम्प बनाकर) प्यास से बचाने लगे।

आरती श्रीवास्तव
महिला समाख्या परियोजना
कर्वी (बांदा)